बिलट महथा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी.

10-08-2020

स्नातक द्वितीय खण्ड

राष्ट्रभाषा हिन्दी (100)

रामनारायण प्रसाद

सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का स्वरूप

आज भारत के विविध सांस्कृतिक परिवेशों में हिन्दी की पहुँच हो चुकी है। अतः अनेक भाषा-भाषी क्षेत्रों में सामान्य रूप से हिन्दी का प्रवेश होना अस्वाभाविक नहीं है।

सम्पर्क भाषा का महत्व बहुभाषी देश में ज्यादा होता है ऐसे देशों में दैनन्दिन जीवन की जरूरतों से लेकर राष्ट्रीय स्तर के कार्यों के लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है, जो वहाँ की विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले लोगों के सम्पर्क का माध्यम बन सके। जिस किसी देश में भी बहुभाषिक-संस्कृति होती है वहाँ सम्पर्क भाषा की नितान्त आवश्यकता होती है कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी देश में एकाधिक भाषाओं को भी सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयोग किया जाता है जैसे भारत में हिन्दी के साथ अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी सम्पर्क भाषा के रूप में किया जा रहा है।

सम्पर्क भाषा जन-सामान्य की जरूरतों की भाषा होती है। जन-साधारण की इच्छा के अनुरूप ही शासन तन्त्र उसका ग्रहण या त्याग करता है।

शासन व्यवस्था के संचालन में भी सम्पर्क भाषा की बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी भाषा को सम्पर्क भाषा बनने के लिए यह आवश्यक है कि उसका प्रचलन हो, साथ ही यह भी आवश्यक है कि वह भाषा जीवन के विविध कार्यक्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली हो धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, व्यापारिक, शिल्प, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन के क्षेत्रों में इस भाषा का अधिकाधिक उपयोग हो जीव

के अत्यन्त आवश्यक कार्यों के लिए इसका प्रयोग होता है। सैनिकों के प्रशिक्षण एवं संचालन के निमित्त तथा उनमें सूचनाओं एवं विभिन्न विचारों के सम्प्रेषण के लिए सम्पर्क भाषा की आवश्यकता अखिल भारतीय स्तर पर होने वाले ऐसे कार्यों के लिए सम्पर्क भाषा प्रयुक्त की जाती है। सम्पर्क भाषा के रूप में लम्बे समय से प्रयुक्त होने के कारण हिन्दी के अनेक रूप विकसित हुए हैं। यद्यपि भारत की अनेक भाषाएँ साहित्यिक परम्परा से समृद्ध हैं फिर भी हिन्दी ही भारत की सम्पर्क भाषा है इसके कतिपय कारण हैं; जैसे —

हिन्दी का प्रचार हमारे देश में व्यापक है। हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भारतीय भाषा है जिसके बोलने वालों की संख्या भारत के बाहर भी पायी जाती है। इस भाषा का प्रयोग का व्यक्ति अपना का सरलतापूर्वक चला सकता है। भारत के बड़े भू-भाग में इस भाषा का सर्वाधिक विस्तार है।

हिन्दी राजनीतिक कारणों से भी सम्पर्क भाषा बनी। अफगानिस्तान एवं तुर्की से आए मुस्लिम विजेता हिन्दी प्रदेश में आ बसे। इस कारण इस क्षेत्र की भाषा देश भर में प्रसरित हुई प्रशासन, भूमि, व्यवस्था, सेना आदि से सम्बन्धित कार्यों में शासकों को कर्मचारियों से एवं जन साधारण से सम्पर्क के लिए हिन्दी भाषा की मदद लेनी पड़ी। इस प्रकार हिन्दी एक प्रकार की संपर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त होने लगी। व्यापक कारण से भी हिन्दी भारत की सम्पर्क भाषा बनी। मध्यकाल में आगरा व्यापार का बड़ा केन्द्र था व्यापार की मंडी के रूप में आगरा का

अधिक विकास हुआ परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में लोग वहाँ अन्य क्षेत्रों में जा बसे एंव उनकी बोली का प्रचार- प्रसार हुआ। हिन्दीतर क्षेत्रों में स्थापित उद्योगो में भी हिन्दी क्षेत्र के अनेक श्रमिकों को रोजगार मिला एंव उनसे भी भाषिक आदान-प्रदान हुआ। सम्पूर्ण भारत में तब से अब तक व्यापार एंव वाणिज्य में हिन्दी की भूमिका महत्वपूर्ण बनी हुई है। हिन्दी के सम्पर्क भाषा बनने के सामाजिक सांस्कृतिक कारण भी थे। अखिल भारतीय धार्मिक सांस्कृतिक परिदृश्य ने भी हिन्दी भाषा को सपंर्क भाषा बनाया। फकीरों, सन्तों, दरवेशों आदि के माध्यम से दक्षिण क्षेत्रों में हिन्दी का प्रसार हुआ। गोरखनाथ, चटपट नाथ आदि कवियों ने अपनी वाणी हिन्दी में लिखी। मराठी के नामदेव रामदास, एकनाथ आदि ने हिन्दी में कविता लिखी। हिन्दी लम्बे समय से देश के विभिन्न रचनाकारों को अपनी ओर आकृष्ट करती रही। हिन्दी सीखने में बहुत सरल है इसलि यह लम्बे समय से भारत में सम्पर्क भाषा का काम करती रही है यौरोपीय परिवार की भाषाएँ बोलने वाले तो इसे सरलतापूर्वक सीख सकते हैं। दक्षिण के लोग भी अल्प प्रयास से इसे सीख सकते हैं

भारतीय भाषा होने के कारण हिन्दी शैक्षि क्षेत्र में सम्पर्क का अधिक उपयोगी माध्यम हो सकती है। इस प्रकार हिन्दी को प्रशासनिक क्षेत्र सम्पर्क की भाषा के रू में अपनाने के उद्देश्य से इसे संघ की राजभाषा बनाय गया है। इसके लिए भारतीय संविधान के अन्तर्गत व्यवस्थ की गयी है।

19.05.2020

रामनारायण प्रसाद